इकाई - प्रथम (क)

भूगोल विषय का विकास तथा उसका आधुनिक स्वरूप :-

भूगोल मानव - ज्ञान की मुख्य शाखा है। मनुष्य आदिकाल से जिस ज्ञान का संचय किया है, यह विषय उसकी एक झलक है, आज का भूगोल हजारो वर्षो से संचित ज्ञान का परिणाम है।

विस्तृत अर्थ में भूगोल का जन्म मानव - सृष्टि के साथ ही हुआ होगा, वह उतना ही प्राचीन है जितनी सृष्टि। यह बहुत प्राचीन विषय है। क्योंकि मनुष्य प्राचीन काल से ही पृथ्वी की प्राकृतिक दशा, आकृति, और उसके विस्तार के विषय में अध्ययन करता रहा है। मनुष्य गतिशील, भ्रमणशील तथा जिज्ञासु प्राणी है और एक ही स्थान पर रहकर वह कभी संतुष्ट नही रहा। यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि मानव के जन्म के साथ ही इस महत्वपूर्ण विषय का जन्म हुआ। टालमी (Ptolemy) तथा स्ट्राबो (Strabo) ऐसे ही प्रारम्भिक भूगोलवेत्ता हैं। टालमी ने सौर - जगत का अध्ययन किया और विश्व-परिचय पर पुस्तक लिखी। स्ट्राबो ने भगौलिक सूचना का ज्ञानकोश लिखा।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षक प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर ताखा, बलिया

प्राचीन काल

आधुनिक ज्ञान के आधार पर कहा जा सकता है कि भूगोल का प्रचार ज्ञान - वृद्धि के साधन के रूप में ईसा से तीन सहस्त्र वर्ष पूर्व हुआ था। ऐतिहासिक प्रमाणो के अनुसार 2700 वर्ष ईसा - पूर्व सूमेरियन - सभ्यता के केन्द्र में मानचित्रों की प्राप्ति हुई। प्राचीन नदी - घाटी की सभ्यता - केन्द्रों की अन्य घटनाओं से भूगोल का अस्तित्व स्पष्ट ज्ञात होता है।

इस युग में भूगोल "वर्णनात्मक और पद्यात्मक था। इसमें कई स्थानों पर वास्तविकता का अभाव भी मिलता था। दूसरे देशों को विजय करने वाले तथा विजय करने की इच्छा रखने वाले शक्तिशाली राजाओं द्वारा 'मानचित्र' बनाने की कला को प्रोत्साहन मिला, किन्तु इसका उपयोग राजनैतिक तथा सैनिक दृष्टिकोण से ही हुआ। सेना के एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने में मार्गदर्शन का कार्य इन्ही मानचित्रों

द्वारा होता था। भूगोल के दूसरे अंग भूमि-मापन का भी प्रचार हुआ, क्योंकि नदी-घाटियों की सभ्यताओं के अधिकांश निवासी कृषक थे और भूमि-मापन द्वारा ही उन भूमि-सम्बन्धी विवादों को सुलझाया जा सकता है।

प्राचीन काल में भूगोल स्वतन्त्र विषय न होकर खगोल, नक्षत्र-विद्या, रेखागणित आदि विषयों में सहायक था।

ग्रीक-संस्कृति के उत्थान के साथ-साथ भूगोल की भी उन्नति हुई। वास्तव में यूनानियों ने ही 'पृथ्वी सम्बन्धी ज्ञान' के इस समूह को भूगोल के नाम से सम्बोधित किया। इस प्रथम नामकरण का श्रेय यूनानियों को ही है। ईसा से २०० वर्ष पूर्व इराटस्थनीज ने सर्वप्रथम इस भूमि-अध्ययन का नाम 'ज्योग्राफी' रखा जिसका अर्थ पृथ्वी-वर्णन होता है। भूगोल इस समय "पृथ्वी के अध्ययन तथा वर्णन" का साधन माना जाता था।

यूनानी भूगोलवेत्ताओं ने ज्वालामुखी-उद्गार, भूचाल के कारण, ज्वार-भाटे तथा लहरों का अध्ययन किया। भूगोल की इस शाखा का नाम उन्होंने प्राकृतिक दर्शन रखा। किसी देश की प्राकृतिक परिस्थितियों व वहाँ के निवासियों के जीवन पर क्या प्रभाव पड़ता है, इस विषय का भी अध्ययन उन्होंने किया तथा इस शाखा का नाम मानव-भूगोल रखा। यूनान के महाकवि होमर की कविताओं में भौगोलिक वर्णन मिलता है। ईसा से छठी शताब्दी में मिलीटस के थेल्स ने पृथ्वी के गोलाकार होने की शंका की। अरस्तु ने इसे सिद्ध करने का प्रयत्न किया। पाइथागोरस (मिस्र) ने ५४२ ईसा-पूर्व में पृथ्वी के आकार का पता लगाया। हिरोडोटस (५४५-५४५ ईसापूर्व) भूगोल का जन्मदाता कहा जाता है। परन्तु यूनानी लोग भूगोल का विचार गणित तथा विज्ञान के अन्तर्गत ही करते थे।

ग्रीक युग में भूगोल का विकास समुद्री यात्राओं द्वारा ही हुआ। समुद्री यात्राओं तथा समुद्र द्वारा दूसरे देशों में विजय करने जाना, इसी माध्यम द्वारा भौगोलिक ज्ञान की वृद्धि हुई। इस युग में भूगोल "वर्णनात्मक तथा पद्यात्मक" रहा। हिरोडोटस, पाइथम, इराटस्थनीज, हिप्पार्कस, स्ट्रेबो तथा टाल्मी आदि मुख्य भूगोलवेत्ता थे।

प्राचार्य

रोम की उन्नति होने पर वहाँ के निवासियों ने साम्राज्य - विस्तार की ओर अधिक ध्यान दिया। जिससे भौगोलिक ज्ञान की वृद्धि हुयी। उन्होंने यूरोपिय देशों के भौगोलिक ज्ञान का विस्तार अधिक किया। यूरोप-भर में विशाल तथा लम्बी ~~सड़~~ सड़कें बनाने का श्रेय उन्हीं को है।

भारत में भी समय-समय पर भौगोलिक ज्ञान-वृद्धि होती रहती है। प्राचीन काल में ही यहाँ के भूगोलवेत्ता ने पृथ्वी के विषय में अध्ययन किया। प्राचीन ग्रन्थों, वेदों, पुराणों आदि धर्मग्रन्थों में भूगोल की प्रचुर सामग्री मिलती है। विदेशियों ने भी भारत का भौगोलिक ज्ञान प्राप्त कर यहाँ आक्रमण किये। भूगोल के अध्ययन में विद्वानों का दृष्टिकोण भारत में भौगोलिक न हो कर आध्यात्मिक था।

प्राचीन भूगोल विशेषत: वर्णनात्मक एवं अनुसन्धानात्मक था। वर्णन कभी-कभी कविता द्वारा भी होते थे। कल्पना द्वारा पृथ्वी का वर्णन करना ही इसका उद्देश्य था। यह भूगोल का प्रारम्भिक काल था, इसलिए शिक्षण-पद्धति का बहुत कम विकास हुआ।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

मध्य काल :- भौगोलिक तथ्यों का मेल ईसाई धर्म के सिद्धान्तों से न होने के कारण ईसाई धर्म भूगोल का बहिष्कार किया और भूगोल के अध्ययन तथा भौगोलिक ज्ञान-विकास में बाधा डाली। प्राय: डेढ़ हजार वर्ष तक भूगोल का अध्ययन शिथिल रहा। लेकिन इस समय को अंधकार युग कहना अनुपयुक्त न होगा। सूर्य को केन्द्र मानकर तथा पृथ्वी को गोल एवं गतिशील मानने के कारण गैलिलियो एवं कोपरनिकस आदि प्रमुख व्यक्तियों को ईसाई-धर्मानुयायियों द्वारा कठोर यातनाएँ सहनी पड़ी धार्मिक युद्ध हुए, संस्कृति तथा नगरों का पतन हुआ चारों ओर यूरोप में अशान्ति रही। किसी भी विद्वान

यदि भौगोलिक सिद्धान्तों व कारणों का उल्लेख किया तो उसे नास्तिक माना जाने लगा। ईसाई धर्म के ने लोगों की नवीन दुनिया के विषय में जानने की उत्सुकता कम कर दी।

मुस्लिम काल (वीं शताब्दी) में भूगोल अच्छी उन्नति हुई। अरब भूगोलवेत्ताओं ने नक्षत्र तथा ज्योतिष-विद्या का विकास किया और मरुस्थल में मार्ग ज्ञात करने के लिए इस विद्या की सहायता ली। मानचित्र बनाने की कला का विकास भी इस काल में खूब हुआ। प्रसिद्ध भूगोलवेत्ता इब्नखातुन ने दो प्रकार के भौगोलिक वातावरण का प्रभाव मानव जीवन पर देखा।

① मरुद्यानीय अनुकूल भौगोलिक वातावरण।
② मरुस्थलीय प्रतिकूल भौगोलिक वातावरण।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

मुस्लिम भूगोलवेत्ता व्यवहारिक ज्ञान में अधिक विश्वास रखते थे। क्योंकि वे व्यापारी भी होते थे।

इस समय तक भूगोल का पाठ्यक्रम में कोई स्वतन्त्र स्थान नहीं था। और अब भी इसे लोग 'पृथ्वी का वर्णन' आदि नामों से सम्बोधित करते थे।

15वीं शताब्दी में भूगोल का पुनरुत्थान हुआ व्यापार के प्रसार से नये-नये देशों का पता चला और नये मार्गों की खोज की गयी। अनेक यात्राएँ हुई, जिनका भौगोलिक विवरण लिखा गया। मार्कोपोलो, वास्कोडिगामा, कोलम्बस, मैगलन आदि ने भूगोल के विषय का विस्तार किया। सोलहवीं शताब्दी में सर टॉमस मोर ने भूगोल को पाठ्यक्रम में शामिल कर उसे नवजीवन प्रदान किया। मानचित्र तथा समुद्री चार्ट तैयार करने की कला को प्रोत्साहन मिला।

यह पूरा युग (खोज) तथा (अन्वेषण) से पूर्ण रहा। मार्कोपोलो ने चीन की यात्रा की और देखे हुए राज्यों का वर्णन किया। प्रिंस हेनरी, जो अपने युग (1934-1460) के प्रसिद्ध नाविक कहे जाते

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताखा, बलिया

है। उनके नेतृत्व में अफ्रीका के दक्षिणी किनारों की खोज की। मानचित्र-कला तथा नक्षत्र विद्या के ज्ञान-प्रसार में योग दिया। कला-कौशल तथा विद्या में पर्याप्त उन्नति हुई। सन् 1482 में लोगों की पहुँच कांगो नदी तक हो गई।

पुर्तगाल-निवासियों ने नये संसार की खोज की और मानचित्र द्वारा उसे प्रकट किया। पूर्वी तथा पश्चिमी द्वीप समूह को जाने वाले नये समुद्री मार्गों का भी पता लगाया। वर्णनात्मक तथा गणित सम्बन्धी भूगोल के विकास का केन्द्र जर्मनी रहा इस बात का अनुभव किया जाने लगा कि " भूगोल मस्तिष्क को विकसित करता है, कल्पना शक्ति को उत्तेजित करता है, और इन्द्रियों को तीव्र बनाता है।

इस काल में भूगोल भौगोलिक यात्राओं के अध्ययन के रूप में बढ़ चला। इस समय का भूगोल विभिन्न नामों की सूची-मात्र था। नामावली रट लेना ही भूगोल का पर्याप्त-ज्ञान समझा जाता था। अतः इसे आख्यात तथा अन्तरीप भूगोल तथा भाविक भूगोल की संज्ञा दी गई है। अभी तक भौगोलिक तथ्यों का कोई समुचित संगठन नहीं था और न कोई वैज्ञानिक वर्गीकरण हुआ था। यह एक तालिका के समान था, जिसमें, अस्पष्ट, मनमाने बेढंगे रूप में अनेक नाम एकत्रित कर दिये गये थे। पृथ्वी के धरातल के विषय की जानकारी को सामूहिक रूप से भूगोल की संज्ञा दे दी गयी थी, बिना समझे ही पर्वतों तथा नदियों खाड़ियों, अन्तरीपों की लम्बी सूचियों को रटा देना भूगोल-शिक्षण की मान्य प्रणाली थी। अध्यापक के भय के कारण वह उसे रटकर सुना देते थे। इस प्रकार के अमनोवैज्ञानिक शिक्षण से बालक के शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव पड़ता था।

यद्यपि इस युग में नये देशों की खोज तथा उनमें व्यापार की उन्नति के कारण भौगोलिक ज्ञान की वृद्धि अवश्य हुयी, परन्तु भूगोल के पढ़ाने की विधियों में सुधार नहीं हुआ। एलिजाबेथ के समय

में इंग्लैण्ड के स्कूलों में सहस्त्रों विद्यार्थी द्वीपों, नगरों, खाड़ियों, अन्तरीपों, देशों की सीमाओं तथा समुद्र के नाम रटते थे, जिन्होंने वास्तव में समुद्र कभी देखा ही नहीं था। इस समय के भूगोल-शिक्षण में (कार्य-कारण) सम्बन्धों का अभाव था।

प्राचार्य